कार्यालय निबन्धक सहकारी समितियाँ, उ०प्र० लखनऊ

परिपत्रांकः सी-1088/प्रक्रिया(जेट्रोफा)/ लखनऊ : दिनांक : 01.12.2006

समस्त जिला सहायक निबन्धक,
सहकारी समितियाँ, उ0प्र0,

समस्त सचिव,
जिला सहकारी बैंक लि0,

विषय- बायोफ्यूल मिशन के अन्तर्गत सहकारी समितियाँ/उनके सदस्यों द्वारा बायोफ्यूल (जेट्रोफा) के उत्पादन, विकास एवं प्रक्रिया के सम्बन्ध में।

मनुष्य के आर्थिक विकास में ऊर्जा का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में सकल घरेलू उत्पादन में 10वीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक 8 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान किया गया है। इस वृद्धि के लिये ऊर्जा की मांग में 8 प्रतिशत वृद्धि की आशा की गयी है। देश में ऊर्जा की मांग में अगले 10 वर्षों में जिस तरह की वृद्धि की परिकल्पना की गयी है, वह विश्व में सबसे अधिक है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार एशियाई देशों में सकल विकास दर तुलनात्मक दृष्टि से अधिक होने के कारण इन राष्ट्रों की ऊर्जा खपत में भी बेतहासा वृद्धि हुई है। भारत भी उनमें से एक है। अपनी ऊर्जा सम्बन्धी जरूरतों को पूर्ण करने हेतु प्रति वर्ष हमें रू0 1,10,000 करोड़ मूल्य का पेट्रोलियम आयात करना पड़ता है। इसमें से लगभग 62 प्रतिशत अंश डीजल का है।

बायोफ्यूल मिशन के अन्तर्गत हमारा प्रथम लक्ष्य डीजल की उक्त खपत की प्रतिपूर्ति करना है। जेट्रोफा का तेल, डीजल का सबसे कम लागत एवं प्रभावी विकल्प के रूप में है। नियोजन विभाग द्वारा उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश के विभिन्न 30 जनपदों, जिनमें आगरा मण्डल, झांसी मण्डल, चित्रकूट धाम मण्डल, कानपुर मण्डल, मिर्जापुर मण्डल, वाराणसी मण्डल, आजमगढ़ मण्डल तथा लखनऊ मण्डल के जनपद शामिल है, में लगभग 10 लाख हेक्टेयर रकबे पर जेट्रोफा का रोपण कर हम जहां एक ओर लगभग 15 लाख लोगों का स्वरोजगार के अवसर सृजित करेंगे, वहीं प्रदेश की अर्थव्यवस्था में लगभग रू0 2,800 करोड़ की राजस्व वृद्धि भी नियमित रूप से करेंगे। इसके अलावा ग्लोबल इन्वायरमेन्ट फण्ड से कार्बन एमिशनरिडक्शन मैकेनिज्म के अन्तर्गत प्राप्त होने वाले अमेरिकी डालर अतिरिक्त लाभ के रूप में होगा, जो वातावरण संरक्षण में प्रदेश के योगदान के सापेक्ष प्राप्त होगा।

जेट्राफा का पौधा खराब भूमि पर या सड़क, रेल मार्ग के किनारे, खेतों के मेड़, ऊसर, परती, बंजर तथा बीहड़ के रूप में उपलब्ध भूमि पर लगाया जा सकता है। इसका पौधा क्षारीय, पथरीली एवं बलुई मिट्टी में भी आसानी से विकसित हो सकता है । बहुत ही

क्रमशः 2

खराब तथा कम वर्षा वाले भूमि पर कम धनत्व में पौधों को लगाना उपयुक्त होता है। यह एक बहुवर्षीय पौधा है, जिसका जीवन लगभग 50 वर्ष का होता है। यह कम ऊचांई का वृक्ष या झाड़ है। प्रायः इस पौधे की ऊचांई 3 से 5 मीटर होती है। जेट्रोफा बीज रू0 5.00 प्रति किलो (न्यूनतम 25 प्रतिशत तेल रिकवरी) तथा जेट्रोफा का तेल (बी-100) 25.00 रू0 प्रति लीटर की दर से क्रय करने की व्यवस्था की जायेगी। यह दर भारत सरकार द्वारा समय-समय पर निर्धारित एवं संशोधनीय है।

आप अवगत ही है कि प्रदेश के प्रायः सभी जिला सहकारी फेडरेशन, सहकारी क्रय-विक्रय समितियां तथा प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियां एवं सहकारी संघों के कार्यालय जहां स्थापित है, वहां उनके परिसर में ऐसी जमीन अनुपयोगी पड़ी हुई है, जिसका या तो बाहर के लोग अतिक्रमण कर रहे है या खाली पड़ी हुई है।

अतः आप अपने जनपद के ऐसे सहकारी संस्थाओं का चिन्हांकन कर लें, जहां पर खाली जमीन पड़ी हो और वहां पर जेट्रोफा के बीजों का रोपण किया जा सकता हो। साथ ही, सहकारी समितियों के ऐसे अनेकों सम्बद्ध सदस्य होंगे जिनकी जमीन ऊसर, परती, बंजर तथा बीहड़ के रूप में अनुपयोगी पड़ी होगी, उन सदस्यों को भी प्रेरित करके जेट्रोफा के बीजों का रोपण कराकर उनके लिये लाभ का एक साधन बनाया जा सकता है। इससे जहां सहकारी संस्थाओं में अप्रयुक्त जमीन संस्थाओं को स्वाश्रयी बनाने में उपयोगी होगी, वहीं प्रदेश के बायोफ्यूल मिशन के उत्पादन एवं विकास की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाया जा सकेगा।

प्रथम चरण में आप अपने जनपद में स्थित जिला सहकारी फेडरेशन, सहकारी क्रय-विक्रय समितियां, प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियों तथा सहकारी संघों के सचिवों की तहसील स्तर पर बैठकें आयोजित कर उन्हें जेट्रोफा के महत्व की जानकारी दें तथा संस्थाओं में उपलब्ध अनुपयोगी भूमि का विवरण प्राप्त कर उस पर जेट्रोफा के बीज एवं पौधों का रोपण करायें। साथ ही, इन सहकारी संस्थाओं से सम्बद्ध ऐसे सदस्यों को भी जेट्रोफा बीज रोपण हेतु प्रेरित करें जिनके पास ऊसर, परती, बंजर, बीहड़ तथा उपजाऊ खेत के मेड़ों पर जमीन उपलब्ध है।

चूँकि यह कार्यक्रम भारत सरकार के संरक्षण में उत्तर प्रदेश सरकार के नियोजन विभाग एवं उद्यान विभाग द्वारा क्रियान्वित एवं संचालित किया जा रहा है, इसलिये अपने जिले के जिला उद्यान अधिकारी से बीजों की उपलब्धता के सम्बन्ध में वार्ता कर व्यवस्था सुनिश्चित करें।

जेट्रोफा के बीज डालने का उचित समय माह फरवरी है। अतः अपेक्षित कार्यवाही तत्काल प्रारम्भ किया जाये। आवश्यक बीज/पौध हेतु जिला उद्यान अधिकारी से सम्पर्क कर व्यवस्था सुनिश्चित की जाय। यदि बीज की उपलब्धता में कोई कठिनाई हो तो दिसम्बर, 2006 के अन्त तक प्रबन्ध निदेशक पैक्सफेड एवं इस कार्यालय को अवगत कराया जाय।

क्रमश.....3 पर

प्रदेश स्तर पर उत्तर प्रदेश सहकारी विधायन एवं शीतगृह संघ लि0 (पैक्सफेड) लखनऊ द्वारा इसका समन्वय किया जा रहा है। पैक्सफेड उत्पादित बीजों की प्रक्रिया एवं तद्नुसार उत्पादित डीजल विक्रय की व्यवस्था में आवश्यक सहयोग प्रदान करते हुये तकनीकी मार्गदर्शन भी देगा। जेट्रोफा उत्पादन किये जाने के सम्बन्ध में संलग्न प्रारूप पर मासिक प्रगति मुख्य तकनीकी अधिकारी, प्रधान कार्यालय एवं उत्तर प्रदेश सहकारी विधायन एवं शीतगृह संघ लि0 (पैक्सफेड) लखनऊ को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। जेट्रोफा बायोडीजल (जेट्रोफा से उत्पादित) के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हेतु एक साहित्य एवं उसकी आर्थिकता भी संलग्न कर आपके उपयोगार्थ प्रेषित किया जा रहा है।

संलग्नक : यथोक्त्

Gangadeen

(गंगादीन) 01/12/06
निबन्धक
सहकारी समितियाँ, उत्तर प्रदेश

परिपत्रांकः सी-1088/प्रक्रिया(जेट्रोफा)/ लखनऊ दिनांक : तदैव

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाई हेतु प्रेषितः-

1- समस्त जिला उद्यान अधिकारी, उत्तर प्रदेश।
2- समस्त मण्डलीय उप निदेशक, उद्यान विभाग, उत्तर प्रदेश।
3- समस्त संयुक्त निबन्धक, सहकारी समितियाँ, उत्तर प्रदेश।
4- समस्त अपर निबन्धक, सहकारी समितियाँ, मुख्यालय।
5- समस्त प्रबन्ध निदेशक, शीर्ष संस्थायें।
6- समस्त जिलाधिकारी, उत्तर प्रदेश।
7- समस्त मण्डलायुक्त, उत्तर प्रदेश।
8- निदेशक, उद्यान विभाग, उत्तर प्रदेश।
9- सचिव (नियोजन) उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।
10- सचिव (सहकारिता) उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।

Gangadeen

निबन्धक 01/12/06
सहकारी समितियाँ, उत्तर प्रदेश

जेट्रोफा उत्पादन हेतु उपलब्ध जमीन का विवरण

प्रारूप–1

क्र0 सं0	समिति का नाम	सदस्यों का संख्या	परिसर में भूमि एकड़ में	परिसर के बाहर भूमि एकड़ में		मेड़ एवं बाउन्ड्री की भूमि लम्बाई मी0 में		परिसर के बाहर अन्य सम्भावित भूमि एकड़ में		कुल भूमि	
				समिति का भूमि	सदस्यों की भूमि	समिति का भूमि	सदस्यों की भूमि	समिति के स्तर पर	सदस्यों के स्तर पर	क्षेत्रफल एकड़ में	लम्बाई
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

प्रारूप–2

बीज की व्यवस्था (किलो)			पौध की व्यवस्था (संख्या)		
आवश्यकता	उपलब्धता	उपयोग (बीज जो बोया गया)	आवश्यकता (मांग)	प्राप्ति	उपयोग
1	2	3	4	5	6

उ0प्र0 सहकारी विधायन एवं शीतगृह संघ लि0
19–ए, विधान सभा मार्ग, लखनऊ
(ISO 9001:2000 प्रमाणित सरकारी निर्माण एजेन्सी)

प्रिय सहकारी बन्धुओं,

बढ़ती हुई खेती की लागत तथा घटता हुआ मुनाफा किसानों का मनोबल तोड़ रहा है। आज खेती श्रम तथा धन के अनुपात में अलाभकारी होती जा रही है। कभी डीजल का दाम बढ़ता है कभी रसायनिक खादों का दाम बढ़ता है। इस समस्या का समाधान किसान को अपने संसाधनों से ही ढूढ़ना है। डीजल का एक प्रबल विकल्प जेट्रोफा कर्कस के रूप में हमारे बीच में आ चुका है।

जैट्रोफा कर्कस (वायो डीजल)

"खाड़ी का नहीं झाड़ी का तेल"

यह डीजल और रसायनिक खाद का एक सशक्त एवं सास्वत विकल्प है।

जेट्रोफा के तेल को सीधे डीजल के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है। जेट्रोफा एक बहुवर्षीय हमेशा हरा-भरा रहने वाला पौधा है। इसके पौधे की ऊँचाई तीन से चार मीटर तक होती है। जेट्रोफा के लिए शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु अधिक उपयुक्त होती है, यह अत्यन्त सूखारोधी एवं जल भराव (अधिकतम 15-20 दिन) को सहन कर सकता है। जेट्रोफा के पौधे को जुलाई से सितम्बर तक बरसात के मौसम में लगाया जाता है। ऊसर एवं बंजर भूमि में यह अच्छी तरह से विकसित होता है। खेत में सघन रूप से इसका रोपण करते समय पौधे से पौधे की दूरी 5 फीट तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 8 फीट रखनी चाहिए। जेट्रोफा झाड़ीदार पौधा है। इसका उपयोग खेतों में बाड़ लगाने के उद्देश्य से भी किया जा सकता है। प्रति एकड़ 1000 पौधे सघन रोपण में लगाये जा सकते है।

दूसरे वर्ष के बाद पौधों में फूल और फल आना प्रारम्भ हो जाता है। पौधे पर फूल सितम्बर से नवम्बर माह में शाखाओं के अन्तिम सिरे पर लगते हैं। इसके फूल सफेद हरे रंग के होते हैं तथा इसका फल भी हरे वर्ण का होता है जो पकने पर काला हो जाता है। पके फल को तोड़कर छिल्का हटाकर उसमें से बीज निकाल लिया जाता है। बीजों का रंग भी काला होता है। एक वर्ष बाद मार्च अप्रैल माह में नीचे से 45 सेमी0 छोड़कर ऊपर पौधों की छँटाई कर दें। दूसरे वर्ष के बाद अगल-बगल की शाखाओं की छटाई कर दें। जिससे ज्यादा शाखाएं निकलेंगी तथा उत्पादन में भी वृद्धि होगी। यह छटाई का कार्य शुरू के तीन वर्षों तक किया जाता है।

प्रति एकड़ आय

दूसरे वर्ष के बाद बीज मिलने प्रारम्भ होते हैं, जो क्रमशः बढ़ते जाते हैं तथा पाँचवें वर्ष के बाद पूरी फसल प्राप्त होने लगती है। जो एक एकड़ में लगे पौधे से लगभग 3500 से 4000 किग्रा0 बीज प्राप्त होता है। जेट्रोफा के बीजों से 35 से 40 प्रतिशत तेल निकलता है। बाजार में वर्तमान दर पर इसकी औसत कीमत लगभग रू0 24500-28000 होगी। जो इसी रकबे में उत्पादित गेहूँ या अन्य पारम्परिक फसल से 4-5 गुना ज्यादा है। यदि विभिन्न औषधीय फसलों जैसे-अश्वगंध, मिल्कथीस्टल इत्यादि से इसकी इन्टरक्रापिंग करा दी जाय तो उक्त आय में औसतन 10 हजार प्रति एकड़ की आय वृद्धि और हो जायेगी।

इस पौधे का खेत में बाड़ के रूप में लगायें तो भी पारम्परिक खेती की जा सकती है। एक एकड़ खेत की चौहद्दी बाड़ के रूप में लगाया जाय तो पौधे से पौधे के बीच की दूरी पाँच फीट की दूरी पर लगायें। इस प्रकार कुल दो सौ पौधे लगाये जायेंगे। इन पौधों से लगभग आठ सौ किग्रा बीज उत्पादित होगा जिसकी वर्तमान बाजार में कीमत रू0 5600 होगी। यह आय उसकी पारम्परिक खेती से होने वाली आय के अतिरिक्त है। इसके अलावा क्योटो प्रोटोकाल के माध्यम से कार्बन ट्रेडिंग कर हम अतिरिक्त डालर भी अपनी अर्थव्यवस्था के लिए अर्जित कर सकते हैं।

विशेषताएँ

यह एक बहुवर्षीय पौधा है तथा इसकी आयु लगभग 40-45 वर्ष अनुमानित है। इस पौधे को कोई भी जंगली जानवर नहीं खाता। इसका तेल ईंधन के रूप में डीजल के प्रतिस्थापक के हैसियत से प्रयोग में लाया जाता है जबकि इसकी खली उच्च गुणवत्ता का कीटनाशक एवं नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटास के एक कम लागत प्राकृतिक स्रोत के रूप में स्थापित की जा सकती है। इसके जलाने से वातावरण में कार्बनडाई आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड तथा सल्फरडाई आक्साइड जैसी खतरनाक गैसे नहीं निकलती है जबकि सामान्य डीजल में निकलती है।

ब्राजील अपनी परिवहन ईंधन औद्योगिक ईंधन की कुल आवश्यकता का 80 प्रतिशत अंश जेट्रोफा के तेल से पूरा कर रहा है। उसका यह प्रयास वर्ष 1950 से अनवरत जारी है।

जेट्रोफा विकास कार्यक्रम वर्तमान की आवश्यकता है तथा हमारा भविष्य इस पर काफी हद तक आश्रित होगा क्योंकि वर्तमान पेट्रोलियम के प्राकृतिक भण्डार वर्ष 2024-2025 में समाप्त हो जायेंगे। सुनिश्चित बिक्री हेतु कारपोरेट सेक्टर से शासन स्तर पर प्रयास जारी है।

पेट्रोलियम पदार्थों की समस्या के निराकरण में भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर जेट्रोफा पौधे के उत्पादन हेतु पैक्सफेड कटिबद्ध है और इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में सहकारी क्षेत्र की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु पैक्सफेड की प्रबन्ध कमेटी ने अपनी बैठक दिनांक 15-09-05 में जेट्रोफा उत्पादन, विकास एवं प्रक्रिया कर वायो डीजल के व्यवसाय का निर्णय लिया है।

आर0 पी0 सिंह
प्रबन्ध निदेशक